राष्ट्रवाद के जन्म के कारण :-

अंग्रेजों ने कृषि क्षेत्र में बंदोबस्त की नितीयाँ शुरू कर दी थी, जैसे - स्थाई बंदोबस्त, महालवाड़ी बंदोबस्त और रैयतवाड़ी बंदोबस्त, इन नितीयों द्वारा किसान वर्ग बहुत प्रताड़ित होने लग गया था और इस कारण कच्चे माल का उत्पादक और तैयार माल का बाजार बन गया था।

वहीं दुसरी ओर उद्योग क्षेत्र भी अंग्रेजों की नितीयों के कारण प्रताड़ित होने लग गया, इसके फलस्वरूप जो लघु उद्योग भारत में चला करते थे वो धीरे-धीरे समाप्त होने लग गये क्योंकि, अंग्रेजों द्वारा यूरोप में तैयार माल को भारत में लाया जाता था और बेचा जाता था। इसके चलते भारत में बनी वस्तुओं की उपयोगीता कम होती गयी। इस प्रकार कृषि और लघु उद्योगों के क्षेत्रों में लोगों की नितीयों (मतलब अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ राष्ट्रवाद का उदय हुआ)।

इसी के साथ-साथ दादाभाई नैरोजी द्वारा **धन के निष्कासन का सिद्धांत** प्रतिपादित किया - जिसमें भारतीयों को समझ आ गया की अंग्रेज भारत में भारतीयों की भलाई के लिए नहीं बल्कि, भारत का धन लूटकर अपने देश ले जाने आऐं हैं और भारतीयों का शोषण करने भारत आऐं हैं, इस कारण भी भारत में एकता की भावना का उदय हुआ जिसके फलस्वरूप भारत में भारत में राष्ट्रवाद का उदय प्रारंभ हुआ।

इसके तत्पश्चात् सामाजिक कारण भी राष्ट्रवाद के उत्थान में सहायक कारक हैं जो भारत की, आधुनीक भारत के इतिहास में हमें यह भी देखने को मिला की भारत में **सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन भी चलाऐं गये।** राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे महान लोगों ने यह सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों को चलाया गया जिसमें इन लोगों ने समाज में चल रही बुराईयों का की अन्त किया, जिसके कारण स्वरूप दयानन्द सरस्वती ऐसे समाज सुधारक के रूप में सामने आऐं जिका। जिनका योगदान इन सामाजिक एवं सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों में सर्वोपरी रहा। इसी क्रम में दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लौट चलने की बात कही। वेदों की ओर लौट चलने से तात्पर्य यह है की भारतीयों को अपनी स्वदेशी व्यवस्था से प्रेम करना चाहिए ना की पश्चिमी देशों की व्यवस्था से। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने और भी कई नितीयाँ बनाई और कहीं जैसे, **बुरा से बुरा स्वदेशी शासन भी किसी विदेशी शासन से अच्छा है।** स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की।

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में **"सांस्कृतिक कारणों"** का विषयवार : इसमें बहुत से कारण रहें जिनकी वजह से भारत में राष्ट्रवाद का उदय हुआ, इन सांस्कृतिक कारणों में कुछ ऐसी ब्रिटीश नितीयाँ भी थीं जो अंग्रेजों ने अपने हितों के